2

विद्यमान विशेषताएँ

कोटा नगर संभागीय मुख्यालय एवं राज्य का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र है। यह नगर राज्य की राजधानी जयपुर नगर से दक्षिण में 240 कि.मी. की दूरी पर दिल्ली–मुम्बई बड़ी रेलवे लाईन पर स्थित है। यह दिल्ली–मुम्बई बड़ी रेलवे लाईन का एक प्रमुख रेलवे जंक्शन है। इसके अतिरिक्त कोटा नगर कोटा–चित्तौड़–नीमच एवं कोटा–बीना बड़ी रेलवे लाईन से जुड़ा होने के कारण देश के सभी महत्वपूर्ण नगरों से इसका सीधा रेल सम्पर्क है। कोटा, दिल्ली से लगभग 470 कि.मी. एवं मुम्बई से लगभग 920 कि.मी. की दूरी पर है। जयपुर–जबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग–12 नगर के बीचों–बीच से गुजरता है। राष्ट्रीय राजमार्ग–27 पिण्डवाडा–कोटा–शिवपुरी (ईस्ट वेस्ट कोरिडोर का एक भाग) नगर को दक्षिणी राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश से सीधा सम्पर्क प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त कोटा–चित्तौड़–नीमच एवं कोटा–बीना बड़ी रेलवे लाईन से जुड़ा होने के कारण देश के सभी प्रमुख नगरों से इसका सीधा सम्पर्क है। नगर के बीचों–बीच हवाई अड्डा है, जहां से हवाई सेवाऐं वर्तमान में संचालित नही होती हैं।

2.1 भौतिक स्वरूप और जलवायु

संभागीय मुख्यालय कोटा, राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में माध्य समुद्रतल से 253. 3 मीटर की ऊंचाई पर चम्बल नदी के किनारे स्थित है। यह $25^{0}11'$ उत्तरी अक्षांश एवं $75^{0}51'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। नगर के दक्षिण में तेज ढलान वाला पठारी क्षेत्र एवं उत्तर में समतल उपजाऊ भूमि है। यह चम्बल सिंचाई क्षेत्र

में स्थित है एवं दाहिनी मुख्य नहर शहर को दो भागों में विभक्त करती है। दाईं मुख्य नहर के उत्तर की भूमि समतल एवं उपजाऊ है। नगर में पानी का निकास दक्षिण से उत्तर की ओर है एवं विभिन्न नाले चम्बल नदी में मिलते हैं। नगर का सामान्य ढलान उत्तर एवं उत्तर पूर्व की ओर है। कोटा नगर की सामान्य जलवायु शुष्क एवं गर्म है। गर्मियों में यहाँ अधिकतम दैनिक औसत तापमान 39 डिग्री सेल्सियस रहता है। सर्दियों में औसत अधिकतम तापमान एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 25 डिग्री सेल्सियस तथा 11 डिग्री सेल्सियस रहता है। नगर की औसत वार्षिक वर्षा 84 से.मी. तथा जुलाई–अगस्त में औसत आर्द्रता लगभग 75% रहती है। गर्मी के मौसम में हवाऐं पश्चिम से पूर्व की ओर तथा सर्दियों के मौसम में उत्तर–पूर्व से दक्षिण– पश्चिम की ओर चलती हैं।

2.2 क्षेत्रीय परिपेक्ष्य

कोटा, राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में स्थित सम्भागीय मुख्यालय है। कोटा संभाग के अन्तर्गत् कोटा, बून्दी, बारां, झालावाड एवं सवाई माधोपुर जिले आते हैं। कोटा, बून्दी, बारां एवं झालावाड़ जिले हाड़ौती क्षेत्र के नाम से जाने जाते हैं। यह बून्दी, बारां एवं सवाई माधोपुर से रेल व सड़कमार्ग से जुडा हुआ है। झालावाड़ नगर कोटा से सड़क मार्ग से अच्छी तरह राष्ट्रीय राजमार्ग 12 द्वारा जुड़ा हुआ है एवं यहाँ पर 'अ' श्रेणी की कृषि उपज मंडी है। यह अनाज, दालों एवं तिलहन का प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र है। यहाँ की प्रमुख फसलें गेहूँ, सोयाबीन, ज्वार एवं चना इत्यादि है। चम्बल सिंचित क्षेत्र में स्थित होने के कारण इसके प्रभाव क्षेत्र में उपलब्ध आर्थिक क्षमतायें नगर के उन्नत एवं उज्ज्वल भविष्य की ओर इंगित करती हैं। कोटा जिले के अन्तर्गत् रामगंजमण्डी कस्बे के आस–पास फर्शी के काम आने वाला पत्थर निकलता है, जो कोटा स्टोन के नाम से विख्यात है। कोटा नगर कोटा स्टोन का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है। निकटवर्ती बून्दी जिले में प्रसिद्ध बासमती चावल की पैदावार होती है। कोटा नगर प्रमुख विद्युत उत्पादन केन्द्र है। यहां पर 1240 मेगावाट का सुपर थर्मल पॉवर प्लांट स्थित है। इसके अतिरिक्त कोटा के आस पास के क्षेत्रों में भी विद्युत उत्पादन के बड़े, मध्यम एवं छोटे पॉवर प्लांट स्थित है जो कि वर्तमान में लगभग

3500 मेगावाट बिजली का उत्पादन कर रहे हैं। कोटा नगर में पानी, बिजली की प्रचुरता तथा बड़ी रेल लाईन एवं राष्ट्रीय राजमार्गों से जुड़ा होने के कारण यहाँ आर्थिक विकास की प्रबल सम्भावनायें हैं।

2.3 ऐतिहासिक

लगभग 670 वर्ष पूर्व, कोटा भील आदिवासियों की एक छोटी आबादी थी, जहाँ पर मिट्टी की झोपडियाँ एवं एक छोटा सा किला था। इसका नाम भीलों के मुखिया कोटिया के नाम पर रखा गया था। चौदहवीं शताब्दी (सन् 1342) के मध्य में इसे बून्दी के हाड़ा राजपूतों ने जीतकर लगभग दो शताब्दी बाद चम्बल नदी के किनारे एक किला बनाया। आबादी विस्तार के साथ उत्तर एवं पूर्व की ओर परकोटे बनाये गए। भौतिक अवरोधों के कारण नगर का विस्तार उस समय पश्चिम एवं दक्षिण में नहीं हुआ।

रेलवे, जल व्यवस्था, बिजलीघर, हवाई अड्डा इत्यादि के विकास के बाद उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक कोटा नगर ने आधुनिक युग में प्रवेश किया। जब परकोटे के बाहर भी इसका विस्तार शुरू हुआ। उत्तर में कोटा जंक्शन के नजदीक भीमगंजमण्डी क्षेत्र विकसित हुआ। आजादी के बाद, देश के विभाजन के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में पश्चिमी पाकिस्तान से शरणार्थी कोटा आये। उत्तर में कोटा जंक्शन के समीप एवं पूर्व में गुमानपुरा के समीप इन शरणार्थियों को बसाने के लिये नऐ आवासीय क्षेत्र विकसित किये गए।

चम्बल परियोजना के प्रथम चरण में सन् 1961 में कोटा बैराज एवं गांधीसागर बांध के पूर्ण होने से इस क्षेत्र में नये आर्थिक अवसर उपलब्ध हुए। दक्षिण–पूर्व में कन्सुआ ग्राम के समीप एक बड़ा औद्योगिक क्षेत्र स्थापित हुआ। कोटा का विकास जो कि चम्बल नदी व रेलवे लाईन के मध्य उत्तर–दक्षिण अक्ष पर हो रहा था, औद्योगिक क्षेत्र के विकास के साथ पूर्व–पश्चिम अक्ष पर शुरू हुआ। इसके बाद दक्षिण में झालावाड़ सड़क पर इन्स्ट्रूमेंटेशन फैक्ट्री एवं इसकी आवासीय कॉलोनी, पूर्व में जे.के. उद्योग एवं इसकी आवासीय कॉलोनी तथा श्रीराम उद्योग एवं इसकी आवासीय कॉलोनी विकसित हुई। इसके अतिरिक्त भी कई वृहद एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना हुई। पश्चिम में चम्बल नदी के अवरोध के कारण

विकास न्यूनतम हुआ। इस काल में अधिकांशतः विकास दक्षिण दिशा में रेलवे लाईन व रावतभाटा सड़क के मध्य राजस्थान आवासन मण्डल एवं नगर विकास न्यास द्वारा नियोजित रूप से जहाँ सरकारी भूमि उपलब्ध थी, हुआ। उत्तर दिशा में रेलवे स्टेशन के समीपवर्ती क्षेत्रों में भी कृषि भूमि पर आवासीय कॉलोनियाँ विकसित हुई। कन्सुआ औद्योगिक क्षेत्र के पास कृषि भूमि अवाप्त नहीं हो पाई। अतः रिक्त भूमि पर कच्ची बस्तियां विकसित हो गयी। चम्बल के पश्चिम में थर्मल प्लांट के निर्माण से इस दिशा में भी कुछ विकास हुआ। इसके उपरान्त अधिकांशतः विकास दक्षिण दिशा में रेलवे लाईन व रावतभाटा सड़क के मध्य राजस्थान आवासन मण्डल व नगर विकास न्यास द्वारा नियोजित रूप से जहाँ सरकारी भूमि उपलब्ध थी, पर हुआ।

विगत् 10 वर्षों में राज्य सरकार द्वारा नगरीय विकास की निजी क्षेत्र में भागीदारी से नियोजित रूप में विकास हेतु टाउनशिप पॉलिसी जारी किये जाने के फलस्वरूप नगर के पूर्व एवं पश्चिम दिशा में निजी कृषि भूमि पर तेजी से नगर का विस्तार हुआ। जिला प्रशासन द्वारा बड़ी मात्रा में सिवायचक भूमि नगर विकास न्यास को हस्तान्तरित किये जाने के फलस्वरूप लखावा व रानपुर क्षेत्र तथा नगर के पश्चिम में नान्ता व राम नगर क्षेत्र में नगर विकास न्यास द्वारा कई योजनाओं का विकास कार्य हाथ में लिया गया। रीको द्वारा रानपुर में औद्योगिक क्षेत्र का विकास किया गया।

कोटा की जनसंख्या वर्ष 1971 में 2,12,991 से बढ़कर वर्ष 1991 में 5,37,371 हो गयी, तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर एवं विकास की प्रबल सम्भावनाओं को देखते हुए, कोटा को दिल्ली महानगर का काउण्टर मैग्नेट नगर भी चयनित किया गया। कोटा नगर की जनसंख्या वर्ष 2001 में 6,94,316 थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 10,01,365 हो गई है एवं वर्ष 2001 से 2011 की वृद्धि दर 44.22 प्रतिशत रही है।

2.4 जनांकिकी

कोटा नगर की जनसंख्या के आंकड़े 1901 से उपलब्ध हैं। 1901 में कोटा नगर की जनसंख्या 33,657 थी। सन् 1931 तक नगर की जनसंख्या में मामूली वृद्धि

हुयी। 1941 एवं 1951 में वृद्धि–दर क्रमशः 24.98 % एवं 37.53 % रही। वर्ष 1951 के पश्चात् नगर की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई, जिसका मुख्य कारण नगर में बड़े–बड़े उद्योगों की स्थापना रहा। सबसे अधिक वृद्धि दर 1951–1961 के दशक में रही, जो 84.84 % थी। वर्ष 1951 से 2011 तक पिछले 50 वर्षो के दौरान कोटा नगर की जनसंख्या 65,107 से बढ़कर 10,01,365 (लगभग पन्द्रह गुना से भी अधिक) हो गयी, जो कि तीव्र विकास का अपने आप में उदाहरण है। वर्ष 1901 से वर्ष 2011 तक की जनसंख्या वृद्धि प्रवृत्ति को तालिका संख्या 1 में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 1
जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति–कोटा–1901–2011

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	वृद्धि–दर
1901	33,657	–	–
1911	32,753	– 904	– 2.69
1921	31,707	– 1,046	– 3.19
1931	37,876	+ 6,169	+ 19.46
1941	47,339	+ 9,463	+ 24.98
1951	65,107	+ 17,768	+ 37.53
1961	1,20,345	+ 55,283	+ 84.84
1971	2,12,991	+ 92,646	+ 76.98
1981	3,58,241	+ 1,45,250	+ 68.20
1991	5,37,371	+ 1,79,130	+ 50.00
2001	6,94,316	+ 1,56,945	+ 29.21
2011	10,01,365	+ 3,07,049	+ 44.22

स्रोतः जनगणना, भारत सरकार।

2.5 व्यावसायिक संरचना

सन् 2001 एवं 2011 की जनगणना के अनुसार कोटा नगर में जनसंख्या का कार्यशील सहभागिता अनुपात अनुमानतः 25.32% व 26.30% रहा। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार कोटा नगर में कुल 1,75,845 व्यक्ति कार्यशील थे। वर्ष 2011 में जनगणना के अनुमानों से स्पष्ट होता है कि कोटा नगर में औद्योगिक तथा कृषि गतिविधियों में कार्यरत् व्यक्तियों की संख्या में गिरावट आयी है, जबकि निर्माण, व्यापार एवं वाणिज्य तथा सेवा क्षेत्र में कार्यरत्

व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हुई है। नगर नियोजन विभाग के अनुसार वर्ष 2011 में उद्योगों में 21.25%, व्यापार एवं वाणिज्य में 21.00% व अन्य सेवाओं में 32.26% व्यक्तियों के कार्यरत रहने का अनुमान है। वर्ष 2001 एवं 2011 की व्यावसायिक संरचना को तालिका संख्या 2 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या – 2

व्यावसायिक संरचना–कोटा–2001–2011

क्र. सं0	व्यवसाय	2001 (अनुमानित)		2011 (अनुमानित)	
		कामगार व्यक्तियों की संख्या	कामगार व्यक्तियों का प्रतिशत	कामगार व्यक्तियों की संख्या	काम करने वाले व्यक्तियों का प्रतिशत
1	कृषि, खनन एवं सहायक गतिविधियाँ	13,188	7.50	18,000	6.83
2	उद्योग	42,290	24.05	55,980	21.26
3	निर्माण	15,105	8.59	23,780	9.03
4	व्यापार एवं वाणिज्यिक गतिविधियाँ	34,906	19.85	55,300	21.00
5	परिवहन एवं संचार	17,567	9.99	25,350	9.62
6	अन्य सेवायें	52,789	30.02	84,955	32.26
	योग	**175845**	**100.00**	**263365**	**100.00**
	कुल जनसंख्या का प्रतिशत		**25.32%**		**26.30%**

स्रोतः नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार अनुमान।

विद्यमान भू–उपयोग

कोटा नगर 1971 में 2,12,991 की आबादी का नगर था। वर्ष 1971 में एवं 1991 में नगर की नगर परिषद सीमा क्रमशः 34,880 एकड़ व 50,589 एकड़ थी। वर्तमान में नगर निगम सीमा क्षेत्रफल लगभग 1,30,260 एकड़ (527.03 वर्ग कि.मी.) है। नगर का वर्तमान नगरीयकृत क्षेत्र 31,500 एकड़ है, जिसमें से केवल 21,221 एकड़ ही विकसित क्षेत्र के अन्तर्गत् है, शेष भूमि सरकारी आरक्षित, कृषि, अन्य रिक्त एवं अर्द्ध विकसित, जलाशय व राख निस्तारण के अन्तर्गत् आती है। नगर के अन्दर सघन आबादी के विकास के कारण आवासीय क्षेत्र विकसित क्षेत्र का 43.84% है। नगर औद्योगिक नगर होने के फलस्वरूप

औद्योगिक उपयोग के अन्तर्गत् 19.09% क्षेत्र आता है। आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत् केवल 2.40% क्षेत्र सम्मिलित है, जबकि सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक उपयोग के अन्तर्गत् 13.24% क्षेत्र है। वाणिज्यिक भू–उपयोग 5.51% तथा सरकारी एवं अर्द्धसरकारी उपयोग के अन्तर्गत् केवल 1.15% क्षेत्र ही है। तालिका संख्या 3 में विद्यमान भू–उपयोग वर्ष 2012 को दर्शाया गया है –

तालिका संख्या – 3

विद्यमान भू–उपयोग–कोटा–2012

क्रं. संख्या	भू–उपयोग	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीकृत क्षेत्र का प्रतिशत
1	आवासीय	9304	43.84	29.54
2	वाणिज्यिक	1170	5.51	3.71
3	औद्योगिक	4050	19.09	12.86
4	सरकारी एवं अर्द्धसरकारी	243	1.15	0.77
5	आमोद प्रमोद	510	2.40	1.62
6	सार्वजनिक व अर्द्ध सार्वजनिक	2810	13.24	8.92
7	परिसंचरण	3134	14.77	9.95
	विकसित क्षेत्र :	**21221**	**100.00**	**67.37**
8	जलाशय	1391		4.42
9	कृषि	365		1.16
10	अन्य रिक्त एवं अर्द्धविकसित भूमियां	3283		10.42
11	सरकारी आरक्षित	4379		13.90
12	राख निस्तारण क्षेत्र	861		2.73
	नगरीकृत क्षेत्र	**31500**		100.00

स्रोत : नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार सर्वेक्षण एवं आंकलन

2.6 (1) आवासीय

2.6 (1) अ आवासन

वर्ष 2012 के सर्वेक्षण के अनुसार आवासीय उपयोग के अन्तर्गत् कुल क्षेत्र 9,304 एकड़ है, जो विकसित क्षेत्र का 43.84% है। वर्तमान में औसत आवासीय घनत्व लगभग 107 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

कोटा नगर निगम सीमा 60 वार्डों में विभक्त है, जिसमें से परकोटे के अन्तर्गत् 10 वार्ड आते हैं, जिनका क्षेत्रफल लगभग 570 एकड़ एवं औसत घनत्व लगभग

250 व्यक्ति प्रति एकड़ है। अधिकतम घनत्व वार्ड संख्या 30 का, 924 व्यक्ति प्रति एकड़ है। परकोटे के बाहर के क्षेत्र में बल्लभबाड़ी, बल्लभनगर, दादाबाडी, विज्ञान नगर, तलवण्डी, महावीर नगर, केशवपुरा एवं अन्य नई विकसित आवासीय योजनाओं में औसत आवासीय घनत्व 51–150 व्यक्ति प्रति एकड़ है। नगर के दक्षिण में वर्ष 1991 के पश्चात् नगर विकास न्यास एवं राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा विकसित की गई योजनायें, जैसे रंगबाडी, श्रीनाथपुरम्, आर.के.पुरम्, विवेकानंद नगर, गणेश नगर, सुभाष नगर, इत्यादि आवासीय योजनाओं का लगभग 25% से अधिक क्षेत्र खाली है, जिनका क्षैत्रफल लगभग 1000 एकड़ है। इसके पश्चात् कृषि भूमियों पर हो रहे अधिकृत/अनाधिकृत विकास की दिशा में नगर विकास न्यास द्वारा विकासरत अन्य योजनाओं मोहन लाल सुखाड़िया, लखावा आवासीय योजना, रानपुर आवासीय योजना, इत्यादि आवासीय योजनाओं का क्षैत्रफल लगभग 750 एकड़ है। इसके अतिरिक्त राज्य एवं केन्द्र सरकार की योजनाओं के तहत् अफोर्डेबल हाऊसिंग योजना प्रेम नगर, कंसुआ, भदाना, बालिता इत्यादि आवासीय योजनाऐं निर्माणरत है। नगर के पश्चिम में चम्बल नदी के पार स्थित वार्डो, क्रमशः 1, 2 व 27 में औसत घनत्व 5–30 व्यक्ति प्रति एकड़ है। नगर के कम घनत्व के क्षेत्रों में वार्ड संख्या 7, 11, 22, 26, 43 एवं 56 में भी औसत घनत्व 5–30 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

2.6 (1) ब कच्ची बस्तियां

कोटा नगर में 84 कच्ची बस्तियां है, जिनमें लगभग 3,06,070 व्यक्ति निवास कर रहे हैं। अधिकांश कच्ची बस्तियाँ औद्योगिक क्षेत्र के समीप, नदी एवं नालों के किनारे, सरकारी भूमि पर विकसित हुई हैं। नगर विकास न्यास एवं नगर निगम द्वारा नियमित कच्ची बस्तियों में मूलभूत सुविधाऐं उपलब्ध करवाने हेतु समय–समय पर विकास कार्य करवाये गए हैं। इस दौरान वर्ष 2005 के पश्चात् केन्द्र सरकार के अभियान जे.एन.एन.यू.आर.एम. के तहत योजना समन्वित आवास एवं कच्ची बस्ती विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत् नगर निगम कोटा की 34 बस्तियों एवं नगर सुधार की 4 बस्तियों की मूलभूत सुविधाओं

का विकास, आवास निर्माण एवं पुनर्स्थापन के कार्य हुए हैं जिससे इन कच्ची बस्तियों में निवास कर रहे लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। अन्य अनियमित कच्ची बस्तियों में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है, कई कच्ची बस्तियां नदी एवं नालों के बहाव क्षेत्र में स्थित हैं।

2.6 (2) वाणिज्यिक

नगर के कुल विकसित क्षेत्र का लगभग 5.51% अर्थात् 1170 एकड़ भूमि पर वाणिज्यिक गतिविधियाँ संचालित हैं। मुख्य कार्य कलाप जैसे थोक एवं फुटकर व्यापार दोनों ही नगर परकोटे के अंदर तथा नगर परकोटे के साथ–साथ विकसित हुए हैं। नगर परकोटे के अंदर का मुख्य वाणिज्यिक क्षेत्र लाड़पुरा से टिपटा तक जिसमें लाड़पुरा बाजार, रामपुरा बाजार, बर्तन बाजार, बजाज खाना, घण्टाघर (किराना, सर्राफा) अग्रसेन बाजार (किराना, शक्कर–तेल का थोक व्यापार एवं जनरल मर्चेण्ट), शास्त्री मार्केट (रेडीमेड गारमेंट), इन्द्रा मार्केट, सब्जी मंडी क्षेत्र नगर कोट के मुख्य बाजार हैं। नगर परकोटे के अंदर मुख्य बाजार, जैसे कपड़े का थोक मार्केट, जनरल मार्केट एवं सर्राफा मार्केट इत्यादि वाणिज्यिक गतिविधियों को परकोटे के बाहर छोटे तालाब क्षेत्र में नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा नया वाणिज्यिक केन्द्र विकसित कर विस्थापित किया गया है। वर्तमान टिम्बर मार्केट भी नगर के भीड–भाड वाले क्षेत्र में पुराने नगर के समीप स्थित है। नगर परकोटे के बाहर नये विकसित क्षेत्रों में मुख्यतः गुमानपुरा, शॉपिंग सेन्टर, मोटर मार्केट, नयी धानमंडी, विश्वकर्मा नगर, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर जवाहर नगर, राजीव प्लाजा, विज्ञान नगर इत्यादि विकसित हुए है। शॉपिंग सेन्टर में नगर का प्रमुख फर्नीचर मार्केट एवं बिल्डिंग मेटेरियल मार्केट स्थित हैं।

विगत् वर्षो में हवाई अड्डा चौराहे के समीप स्थित नई धानमण्ड़ी को इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र में विकसित धानमण्ड़ी परिसर में स्थानांतरित कर दिया गया है। इस प्रकार रिक्त हुए नई धानमण्डी परिसर में नगर के अन्दरूनी भाग से थोक फल एवं सब्जीमण्डी को विस्थापित किया गया है। डी.सी.एम. सड़क पर कार्यरत ट्रांसपोर्ट नगर को, नगर विकास न्यास द्वारा नगर के बाहरी दक्षिणी

भाग में, झालावाड़ सड़क पर गोबरिया बावड़ी चौराहे के समीप नया परिवहन नगर विकसित कर स्थानांतरित किया गया है। हालांकि डी.सी.एम. सड़क पर अभी–भी आंशिक रूप से ट्रांसपोर्ट गतिविधियां चल रही हैं। नगर के मध्य अवांछित स्थलों पर चल रहे पत्थर व्यवसाय को व्यवस्थित ढंग से बसाने हेतु नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा झालावाड़ सड़क एवं परिवहन नगर के समीप ही स्टोन मण्डी विकसित कर स्थानान्तरित किया गया है। एरोड्राम चौराहे पर वर्षो से कार्यरत् कार बाजार संबंधी गतिविधियों को कंसुआ सड़क पर सूरसागर तालाब के निकट स्थानान्तरित किया गया है।

अनाज भण्डारण हेतु गोदाम रावतभाटा सड़क, माला रोड एवं डकनिया रेलवे स्टेशन एवं रानपुर औद्योगिक क्षेत्र, कैथून सड़क बांरा सड़क के समीप स्थित है। तेल कम्पनियों के डिपो रेलवे लाईन के पूर्व में रेलवे कॉलोनी के समीप स्थित हैं। नगर के अधिकांश होटल, नगर के मध्य से गुजर रहे राष्ट्रीय राजमार्ग के आसपास स्थित हैं। इसके अतिरिक्त नये विकसित क्षेत्रों में रंगबाडी सड़क, दादाबाड़ी, बसन्त विहार सड़क, छावनी, तलवण्डी चौराहे के आस पास, विज्ञान नगर इत्यादि स्थानों पर फुटकर मिश्रित व्यवसाय चल रहा है। कोटा में विशिष्ट श्रेणी की कृषि उपजमण्डी स्थित है, जहाँ पर भारी मात्रा में अनाज, दलहन एवं तिलहन एवं मसाले का प्रमुख वाणिज्यिक केन्द्र है। कृषि उपजमण्डी में कृषि उत्पादों की आवक तालिका संख्या 4 में दर्शायी गयी है –

तालिका संख्या–4

कृषि उपजमण्डी में कृषि उत्पादों की आवक (हजार मेट्रिक टन में)

वर्ष	2010	2011	2012
अनाज	315.68	321.92	483.84
दलहन	6.77	15.38	23.02
तिलहन	207.06	248.07	339.66
मसाला	86.85	104.91	96.12
अन्य	25.22	30.69	38.77
कुल उत्पादन	**641.58**	**720.97**	**981.43**

स्रोत : कृषि उपजमण्डी समिति, कोटा

2.6 (3) औद्योगिक

वर्तमान् में 4050 एकड़ भूमि औद्योगिक प्रयोजनार्थ काम में आ रही है, जो कि विकसित क्षेत्र का लगभग 19.09% है। उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1971, 1981 एवं 2001 में क्रमशः 17,950 (28.2%), 29,634 (28.9%) एवं 36,073 (23.6%) थीं। वर्ष 1981 से 2012 के बीच उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों के प्रतिशत में गिरावट का प्रमुख कारण यहां की कुछ प्रमुख इकाईयों का बन्द होना है तथा कोचिंग गतिविधियों की वृद्धि से भी आमजन का सेवा क्षेत्र में रूझान बढ़ा है।

अतः वर्तमान् में औद्योगिक परिवेश को देखते हुए यह स्पष्ट है कि बड़ी रेल लाईन, चम्बल नदी एवं बिजली की उपलब्धता के कारण 60 के दशक में यहाँ बड़े उद्योगों की स्थापना हुई, जिनमें श्रीराम उद्योग समूह, जे.के. उद्योग (वर्तमान में बंद), मल्टीमेटल, सेमकोर उद्योग (वर्तमान में बंद), इन्स्ट्रूमेंटेशन लि. इत्यादि प्रमुख हैं। प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र डी.सी.एम. रोड़ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट का क्षेत्रफल लगभग 1100 एकड़, झालावाड़ रोड इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र, जिसका क्षेत्रफल लगभग 900 एकड़ है। विशेष औद्योगिक क्षेत्र, आई.एल. का क्षेत्रफल लगभग 60 एकड़ है। कन्सुआ सड़क के उत्तर में स्थित औद्योगिक क्षेत्र जिसमें लघु एवं मध्यम उद्योग स्थापित हैं का क्षेत्रफल लगभग 190 एकड़ है। रीको द्वारा नगर के दक्षिण में रानपुर स्थित औद्योगिक क्षेत्र का क्षेत्रफल लगभग 300 एकड़ है।

मास्टर प्लान–2023 में बारां सड़क पर प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र विकसित नहीं हो सका। सेमकोर उद्योग भी वर्ष 2011 से बन्द है। वर्तमान में नगर में 27 बड़े एवं मध्यम उद्योग स्थापित हैं, जिनमें से 14 उद्योग उत्पादन दे रहे हैं। अन्य 13 उद्योग किन्ही कारणों से उत्पादन नहीं दे पा रहे हैं। इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र में मुख्यतः कोटा स्टोन कटिंग व पॉलिशिंग तथा रसायन आधारित उद्योग इकाईयाँ स्थापित हैं। इन प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों के अलावा रावतभाटा सड़क पर तिलम संघ, सोयाबीन प्लांट एवं सरस डेयरी स्थित हैं।

विगत् वर्षो में कोटा, इसके एवं आस–पास के क्षेत्रों में स्थित 8 सोयाबीन प्लांट कार्यरत होने से सोयाबीन तेल एवं डी0ओ0सी0 के उत्पादन के मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। कोटा में मुख्यतः कोटा स्टोन, सैण्ड स्टोन, तिलहन,

दलहन, अनाज, खाद्यान्न, खाद, मैटेलिक एवं नॉन मैटेलिक ऑक्साइड, वेल्डिंग रॉड एवं रसायन उद्योग स्थित है। इन उद्योगों के मुख्य उत्पादन तेल, पाईप, दूध, हींग, खाद, रसायन, ग्लास, सीमेन्ट, सिल्क साड़ी, धागा, अन्य कपड़े, रेडिमेड, फर्नीचर, कागज़, स्टेशनरी, चमड़े की वस्तुऐं, रबड़, प्लास्टिक, खनिज, टाईल्स, विद्युत मशीनरी, ऑटोमोबाइल स्पेयर पार्ट्स, ट्रांसपोर्ट उद्योग, मरम्मत मशीनरी, निर्माण संबंधी औजार एवम् मशीनें, सर्विस उद्योग इत्यादि हैं।

नगर में वर्ष 2012 तक विद्यमान औद्योगिक इकाईयों एवं कर्मचारियों की संख्या तालिका संख्या 5 एवं औद्योगिक गतिविधियों का विवरण तालिका संख्या 6 में दर्शायी गयी हैं।

तालिका संख्या– 5

विद्यमान औद्योगिक इकाईयां एवं कर्मचारियों की संख्या–2012

क्र. सं.	उद्योग के प्रकार	इकाईयों की संख्या	कर्मचारियों की संख्या
1	कृषि आधारित	767	3120
2	तम्बाकू एवं तम्बाकू उत्पाद आधारित	14	100
3	कपास एवं सूती कपड़ा आधारित	46	147
4	ऊनी, सिल्क एवं कृत्रिम धागा आधारित	193	116
5	जूट एवं जूट आधारित	14	90
6	रेडिमेड एवं कढ़ाई/कशीदाकारी आधारित	710	2356
7	लकड़ी व लकड़ी के फर्नीचर आधारित	992	2949
8	कागज़ एवं कागज़ उत्पाद आधारित	182	791
9	चमड़ा आधारित	867	2117
10	रसायन एवं रसायन आधारित	224	1242
11	रबड़, प्लास्टिक एवं पैट्रो आधारित	188	999
12	खनिज़ आधारित	1502	6732
13	धातु आधारित	1195	1481
14	अभियान्त्रिकी आधारित	550	1481
15	बिजली मशीनरी एवं यातायात से संबंधित उपकरण / औजार आधारित	169	693
16	मरम्मत एवं सेवा आधारित	1240	3482
17	वृहद् एवं अन्य विविध औद्योगिक इकाईयां	5340	25050
	कुल संख्या	**14193**	**52946**

स्रोत : जिला उद्योग केन्द्र एवं रीको, कोटा

तालिका संख्या– 6

औद्योगिक गतिविधियों का विवरण, कोटा–2012

क्र. सं.	विवरण	संख्या
1	शहरी क्षेत्र में पंजीकृत औद्योगिक ईकाईयो/उद्यमों की संख्या	14193
2	औद्योगिक इकाईयों/उद्यमों में कार्यरत् कर्मचारियों की संख्या	52946

स्रोत : जिला उद्योग केन्द्र एवं रीको, कोटा

2.6 (4) राजकीय

2.6 (4) अ सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यालय

वर्ष 1971 में कोटा नगर में सरकारी कार्यालयों के अन्तर्गत् 105 एकड़ (1.8%) क्षेत्र था, जो 2012 में बढ़कर 243 एकड़ हो गया, जो कि कुल विकसित क्षेत्र का 1.15% है। संभागीय आयुक्त एवं सिंचित क्षेत्र विकास आयुक्त कार्यालय, नगर विकास न्यास, राजस्थान आवासन मण्डल कार्यालय, पुराना एवं नवनिर्मित नगर निगम कार्यालय, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग कार्यालय, आयकर आयुक्त कार्यालय, रावतभाटा रोड़ पर दशहरा मैदान के समीप स्थित है। जिला कलक्टर कार्यालय, पुलिस उप महानिरीक्षक कार्यालय, जिला एवं सेशन न्यायालय, सार्वजनिक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, विद्युत वितरण निगम एवं जिला ग्रामीण पुलिस अधीक्षक कार्यालय इत्यादि के कार्यालय नयापुरा क्षेत्र में स्थित हैं। नगर जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय, बाराँ सड़क पर स्थित है। पश्चिमी रेलवे का संभागीय कार्यालय माला रोड़ पर रेलवे स्टेशन के समीप स्थित है। मुख्य डाकघर एवं टेलिफोन विभाग का मुख्य कार्यालय नयापुरा में स्थित है।

विगत् वर्षो में पटवार मण्डल का कार्यालय रावतभाटा सड़क पर नयागांव में एवं क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी का कार्यालय झालावाड़ सड़क पर ग्राम लखावा के समीप स्थापित हुए हैं।

वर्तमान में कोटा नगर में केन्द्र, राज्य सरकार, अर्द्धसरकारी एवं स्थानीय निकायों में कुल काम करने वालों की संख्या लगभग 43,773 है, जो कुल जनसंख्या का 4.37% है। वर्तमान में कई सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यालय निजी आवासीय भवनों एवं किराये के भवनों में चल रहे हैं। सरकारी एवं

अर्द्धसरकारी कार्यालयों की वर्ष 2012 की स्थिति को तालिका संख्या 7 में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 7
सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी कार्यालय–कोटा 2012

क्र. संख्या	कार्यालय के प्रकार	कुल कार्यालयों की संख्या	कर्मचारियों की संख्या
1	केन्द्र सरकार	27	18772
2	राज्य सरकार	280	13326
3	अर्द्ध सरकारी (केन्द्र)	85	3387
4	अर्द्ध सरकारी (राज्य)	82	5153
5	स्थानीय निकाय	08	3135
	योग	**482**	**43773**

2.6(4) ब सरकारी आरक्षित

वर्तमान में स्टेशन सड़क पर सेना परिसर स्थित है। इसके अलावा बाराँ सड़क पर शहरी पुलिस लाईन लगभग 20 एकड़ भूमि पर स्थित है। ग्रामीण पुलिस लाईन रेलवे लाईन के पूर्व एवं बाराँ सड़क के दक्षिण में बोरखेड़ा पुलिया के समीप स्थित है। रावतभाटा सड़क पर अकेलगढ़ एवं डेयरी के समीप आर.ए.सी. क्षेत्र स्थित है। नगर के पश्चिम में ग्राम शम्भूपुरा एवं डाबी सड़क पर पर्यावरण औद्योगिक क्षेत्र के मध्य सेना की फायरिंग रेन्ज स्थित है। सरकारी आरक्षित भूमि का कुल क्षेत्रफल लगभग 4379 एकड़ है।

2.6 (5) आमोद–प्रमोद

वर्तमान में कोटा नगर में आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत् कुल 510 एकड़ भूमि विकसित है, जो कि कुल विकसित क्षेत्र का 2.40% है, जबकि 1971 में कुल विकसित क्षेत्र की 6.6% भूमि इसके अन्तर्गत् सम्मिलित थी। इसका प्रमुख कारण नगरी स्तर के आमोद–प्रमोद स्थल, खेल के मैदान एवं उद्यानों का पर्याप्त मात्रा में विकसित नहीं होना रहा है। नदी, जलाशयों, नहरों इत्यादि के कारण कोटा में कई प्राकृतिक सुन्दर स्थल हैं।

2.6 (5) अ उद्यान एवं खुले स्थल

कोटा में नगर के मध्य काफी पुराना छत्र विलास उद्यान स्थित है। नगर के विकास के साथ–साथ चम्बल उद्यान, गांधी उद्यान, ट्रेफिक गार्डन, भीतरिया कुण्ड उद्यान इत्यादि विकसित हुए है। विभिन्न योजनाओं में छोटे स्तर के कई उद्यान, पार्क इत्यादि नगर विकास न्यास एवं आवासन मण्डल एवं नगर निगम द्वारा विकसित किये गए हैं।

गत वर्षो में नगर विकास न्यास ने नगर के मध्य स्थित ऐतिहासिक छत्र विलास उद्यान, रंगबाड़ी बालाजी मन्दिर के आस–पास का जीर्ण–क्षीर्ण उद्यान, नेहरू उद्यान, गोपाल निवास बाग, नागा जी का बाग एवं कई स्थानीय पार्को में रखरखाव एवं योजना बद्ध विकास किया गया है। इसके अतिरिक्त चम्बल उद्यान, गांधी उद्यान, यातायात उद्यान, भीतरिया कुण्ड इत्यादि का समुचित रख–रखाव एवं योजनाबद्ध विकास प्रस्तावित है।

नगर के दक्षिण में खड़े गणेशजी मन्दिर के पास नगर स्तर के गणेश उद्यान परिसर का विकास कार्य नगर विकास न्यास द्वारा कराया जा रहा है, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 100 एकड़ है।

2.6 (5) ब स्टेडियम एवं खेल मैदान

कोटा नगर के मध्य छत्र–विलास उद्यान के समीप महाराव भीमसिंह स्टेडियम स्थित है, जहां पर गणतन्त्र दिवस एवं स्वतन्त्रता दिवस इत्यादि प्रमुख कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। महाराव भीमसिंह स्टेडियम के समीप ही राष्ट्रीय स्तर का खेल मैदान भी स्थित है। इसके समीप ही नगर विकास न्यास द्वारा तरणताल विकसित किया गया है। नये विकसित क्षेत्रों में रेलवे कॉलोनी, दादाबाड़ी, तलवण्डी, कुन्हाड़ी एवं नान्ता में स्थानीय स्तर के स्टेडियम एवं खेल मैदान स्थित हैं। वर्तमान में श्रीनाथमपुरम् क्षेत्र में नगर विकास न्यास द्वारा स्टेडियम का निर्माण कार्य करवाया जा रहा है। विभिन्न महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में भी खेल के मैदान उपलब्ध हैं।

2.6 (5) स अर्द्ध सार्वजनिक मनोरंजन

कोटा नगर के मध्य छत्र विलास उद्यान में उम्मेद क्लब स्थित है। सिविल लाईन्स एवं रेलवे कोलोनी में ऑफिसर्स क्लब तथा मिलिट्री क्षेत्र में क्लब स्थित है। गत् वर्षो में कैथून सड़क पर एक निजी क्लब की स्थापना भी हुई है।

2.6 (5) द मेले एवं पर्यटन सुविधाऐं

कोटा नगर में रावतभाटा सड़क पर ऐतिहासिक दशहरा मेला भरता है। इस मेले के साथ ही पशु मेला भी भरता है। दशहरा मेला, नगर एवं संभाग की जनता के लिये व्यावसायिक तथा पारिवारिक मनोरंजन का प्रमुख केन्द्र है। वर्तमान दौर में छोटे स्तर पर उद्योग मेला, गृह साज सज्जा सामग्री मेला, भवन निर्माण सामग्री एवं प्रोपर्टी व्यवसाय से सम्बन्धित मेले भी हर वर्ष आयोजित होने लगे है।

नगर के मध्य चम्बल नदी पर कोटा बैराज है, जिसके दक्षिण में विस्तृत जल–भराव क्षेत्र है। इसके अलावा चम्बल उद्यान से चम्बल नदी में नौकायान की सुविधा भी उपलब्ध है, जो पर्यटकों को आकर्षित करती है। कोटा नगर में प्रमुखतयाः गढ़ पैलेस, संग्रहालय, छत्र विलास तालाब एवं उद्यान, जग–मंदिर, कोटा–बैराज, कन्सुआ मंदिर, चम्बल उद्यान, भीतरिया कुण्ड, अधर–शिला, क्षार–बाग, अभेड़ा महल एवं तालाब इत्यादि प्रमुख पर्यटन आकर्षण के स्थल हैं। इसके अतिरिक्त कोटा सम्भाग एवं आसपास के क्षेत्र में सवाईमाधोपुर में बाध–अभ्यारण्य, रणथम्भौर किला एवं गणेश मन्दिर, बून्दी जिले में बून्दी नगर का सिटी पैलेस एवं भित्ती चित्र, रानी जी की बावड़ी, चौरासी खम्भों की छतरी एवं अन्य पर्यटन स्थल जैसे गेपरनाथ, चट्टानेश्वर, रामेश्वरम, मेनाल एवं भीमलत स्थित प्राकृतिक झरने, केशवरायपाटन में ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व के मंदिर एवं धाट, रावतभाटा में ऐतिहासिक बाड़ोली मन्दिर, राणाप्रताप सागर, जवाहर सागर एवं बाराँ जिले में सीताबाडी, भण्ड देवरा मन्दिर, शेरगढ़ अभ्यारण्य इत्यादि, कोटा जिले में दरा अभयारण्य जिसे मुकन्दरा हिल्स नेशनल पार्क का दर्जा प्राप्त है तथा झालावाड़ जिले में ऐतिहासिक गागरोन किला, झालावाड़ जिले में ऐतिहासिक गागरोन किला, झालरापाटन में सूर्य मन्दिर, कोलवी की

गुफायें, इत्यादि प्रमुख पर्यटन आकर्षण के स्थल हैं। उपरोक्त सभी स्थल कोटा नगर से लगभग 100–150 कि.मी. की परिधि में स्थित हैं।

2.6 (6) सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक

सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत् सन् 1971 में 950 एकड (16.5%) भूमि थी जो बढकर 2012 में लगभग 2810 एकड़ हो गई है, जो कि कुल विकसित क्षेत्र का 13.24% है। अतः आबादी विस्तार के अनुपात में सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक क्षेत्र में वृद्धि तुलनात्मक रूप से कम हुई है। सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत् शैक्षणिक, चिकित्सा एवं अन्य सामुदायिक सुविधायें सम्मिलित है।

2.6 (6) अ शैक्षणिक

कोटा नगर में वर्तमान में कोटा विश्वविद्यालय, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी महाविद्यालय, चिकित्सा महाविद्यालय, पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, राजकीय महाविद्यालय, वाणिज्य महाविद्यालय एवं जानकी देवी बजाज महिला महाविद्यालय कार्यरत हैं।

नगर में निजी क्षेत्र में विगत् वर्षों में 1 विश्वविद्यालय झालावाड़ सड़क पर केवल नगर के समीप, 8 अभियांत्रिकी महाविद्यालय, 1 दन्त चिकित्सा महाविद्यालय एवं अनेक सामान्य एवं व्यावसायिक महाविद्यालय स्थापित हुए हैं। वर्तमान में निजी क्षेत्र के 2 विश्वविद्यालय व भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (I.I.I.T.) रानपुर में तथा 1 कृषि विश्वविद्यालय बोरखेड़ा सड़क पर प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त 53 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय / माध्यमिक विद्यालय एवं 356 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय / माध्यमिक विद्यालय हैं। वर्तमान में 151 राजकीय प्राथमिक / उच्च प्राथमिक एवं निजी क्षेत्र में 247 प्राथमिक / उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। अधिकांश निजी विद्यालय एवं महाविद्यालय किराये के भवनों में

अपर्याप्त स्थानों पर संचालित हैं, जहाँ पर मापदण्ड़ों के अनुरूप सुविधाओं का अभाव है।

विद्यमान भू–उपयोग मानचित्र 2012 में प्रमुख विद्यालय परिसरों को ही दर्शाया गया है। वर्ष 2012 की प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षणिक संरचना को तालिका संख्या 8 में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या –8
शैक्षणिक संरचना–कोटा–2012

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर (संख्या)	आयु वर्ग	आयु वर्ग में विद्यालय जाने योग्य बालक / बालिकाओं की संख्या (अनुमानित)	कुल पंजीकृत छात्र	कुल भर्ती विद्यार्थियों का शिक्षा योग्य बालक / बालिकाओं पर प्रतिशत	विद्यालय में औसत छात्रों की संख्या	विद्यालय की संख्या
1	प्राथमिक विद्यालय (1–5)	5–10	25,122	23,363	93	132	191
2	उच्च प्राथमिक विद्यालय (6–8)	11–13	45,089	40,129	89	159	283
3	माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय	14–17	1,07,360	96,798	90.16	258	416
	योग	–	177571	160290	–	549	890

स्रोतः नगर नियोजन विभाग व कार्यालय प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, कोटा।

उपरोक्त विद्यालय एवं महाविद्यालयों के अतिरिक्त कोटा नगर में पिछले दशक में कई तकनीकी कोचिंग संस्थान विकसित हुए हैं, जिसमें अभियान्त्रिकी एवं चिकित्सा संस्थानों में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षाओं की कोचिंग दी जाती है। इन कोचिंग संस्थानों में लगभग 80,000 विद्यार्थी प्रति वर्ष कोचिंग प्राप्त करते हैं। इन संस्थानों में राजस्थान राज्य के अलावा अधिकांश राज्यों, जैसे मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, गुजरात एवं अन्य राज्यों से विद्यार्थी आते हैं। इसका प्रभाव कोटा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों पर भी पड़ा

है, जिसके कारण विद्यालयों एवं विद्यार्थियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। उक्त कोचिंग संस्थानों का प्रभाव यहाँ की अर्थव्यवस्था पर विशेष रूप से हुआ है, अर्थव्यवस्था के उत्थान के फलस्वरूप नगर के महानगरीय स्वरूप की शुरूआत हुई है।

2.6 (6) ब चिकित्सा

कोटा नगर में राजकीय सामान्य अस्पताल नयापुरा क्षेत्र में स्थित है जो कि 'महाराव भीमसिंह अस्पताल' के नाम से जाना जाता है। चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना होने के पश्चात् महाराव भीमसिंह चिकित्सालय, चिकित्सा महाविद्यालय से सम्बद्ध है। इसकी वर्तमान क्षमता 474 बिस्तर की है। इसी परिसर में जे.के.लोन महिला चिकित्सालय एवं टी.बी. अस्पताल भी है। इन सभी को मिलाकर महाराव भीमसिंह चिकित्सालय व संलग्न समूहों की कुल क्षमता 849 बिस्तर की है। मेडिकल कॉलेज से सबंद्ध 1000 बिस्तर का अस्पताल भी अस्तित्व में आ चुका है एवं आंशिक रूप से विभिन्न विभागों की 470 बिस्तर की क्षमता कार्यशील हो चुकी है।

इसके अतिरिक्त रामपुरा सैटेलाइट चिकित्सालय, इ.एस.आई. अस्पताल, रेलवे अस्पताल एवं प्रथम श्रेणी आयुर्वेदिक औषधालय एवं एलोपैथिक डिस्पेन्सरियों की कुल संख्या 28 है, जिनकी कुल क्षमता 208 बिस्तर की है। वर्तमान में कोटा में आयुर्वेदिक चिकित्सालय, होम्योपेथिक चिकित्सालय एवं यूनानी चिकित्सालयों की कुल संख्या 12 हैं, जिनकी कुल क्षमता 30 बिस्तर की है। पिछले दशक में प्रमुख निजी अस्पतालों में दादाबाड़ी क्षेत्र में भारत विकास परिषद अस्पताल कार्यरत् है एवं इसके अतिरिक्त नगर में लगभग 85 निजी नर्सिंग एवं मेटरनिटी होम कार्यरत् हैं। अधिकांश निजी नर्सिंग होम अपर्याप्त स्थल एवं अपर्याप्त सुविधाओं के साथ कार्यरत हैं।

कोटा संभाग के अन्तर्गत् बून्दी, सवाई माधोपुर, बाराँ, झालावाड़ एवं कोटा जिला आते हैं। उक्त जिलों की अधिकांश जनता उच्चतर चिकित्सा सुविधाओं के लिये कोटा नगर पर निर्भर है। वर्ष 2012 की कोटा नगर की विद्यमान चिकित्सा सुविधाओं को तालिका संख्या 9 में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 9

विद्यमान चिकित्सा सुविधाएँ–कोटा–2012

क्र. सं.	चिकित्सालय / क्लिनिक	चिकित्सालय की संख्या	विस्तरों की संख्या	डाक्टरों की संख्या	नर्स व अन्य स्टॉफ की सं0
1	एलोपैथिक				
(अ)	राज.सामान्य चिकित्सालय (चिकित्सा महाविद्यालय से सम्बद्ध)				
	(i) महाराव भीमसिंह चिकित्सालय	1	474	35	484
	(ii) जे0के0 लोन व टी0बी0 अस्पताल	1	325	11	113
	(iii) न्यू मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल	1	470	80	280
2	ई.एस.आई., रामपुरा सेटेलाइट अस्पताल एवं अन्य स्वास्थ्य सुविधायें	28	208	22	82
3	राज.आयुर्वेदिक चिकित्सालय, युनानी चिकित्सालय एवं होम्योपेथिक चिकित्सालय	12	30	15	38
4	निजी चिकित्सालय, मेटरनिटी होम, नर्सिंग होम इत्यादि	86	1150	170	783
	योग	**129**	**2657**	**333**	**1780**

स्रोतः सी.एम.एच.ओ./विभिन्न चिकित्सालयों से प्राप्त आंकड़े।

2.6 (6) स सामाजिक / सांस्कृतिक

झालावाड़ सड़क पर नगर विकास न्यास कोटा द्वारा विकसित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्थाओं हेतु योजना में कई संस्थाएँ, जैसे कि इन्स्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियर्स, लॉयन्स क्लब, करणी विकास समिति, मूक–बधिर छात्रावास, वृद्धाश्रम एवं विद्यालय तथा विभिन्न समाजों के सामुदायिक भवन एवं धार्मिक स्थल विकसित हो चुके हैं। नगर के दक्षिण में खड़े गणेश जी मन्दिर के निकट स्थित कबीर चौराहे के आस–पास भी विभिन्न समाजों के सामुदायिक भवन विकसित हुए है।

2.6 (6) द धार्मिक, ऐतिहासिक एवं धरोहर स्थल

नगर के मध्य चम्बल नदी के किनारे गढ़ पैलेस स्थित है। छत्र विलास तालाब के उत्तर में क्षार बाग में ऐतिहासिक छतरियां है। चम्बल नदी के पश्चिम में नान्ता ग्राम के समीप ऐतिहासिक अभेड़ा महल एवं तालाब स्थित है। थेकड़ा स्थित शिव मन्दिर, कोटा नगर के दक्षिण में रंगबाड़ी बालाजी एवं खड़े गणेशजी महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। इसके अतिरिक्त रावतभाटा सड़क पर गोदावरीधाम धार्मिक स्थल स्थित है। नगर के मध्य छत्र विलास तालाब में ऐतिहासिक जलमहल है। डी.सी.एम. सड़क पर कन्सुआ क्षेत्र में ऐतिहासिक प्राचीन (ई0पू0 700 वर्ष) शिव जी के मन्दिर का विकास कार्य भी किया गया है, जो कि पर्यटन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थल है।

2.6 (6) य अन्य सामुदायिक सुविधायें

कोटा नगर में मनोरंजन के लिये वर्तमान में 9 छविगृह विद्यमान है, जिनमें से 1 स्टेशन सड़क पर, 1 नयापुरा चौराहे पर, 3 नगर के दक्षिण में ओम सिने प्लेक्स तथा 4 छविगृह झालावाड़ सड़क पर स्थापित सिटी मॉल में कार्यरत् है। इसके अतिरिक्त 2 छविगृह बंद हैं एवं एरोड्राम चौराहा स्थित छविगृह की भूमि पर 1 मल्टीप्लेक्स निर्माणाधीन है।

नगर में एक राजकीय सम्भागीय स्तर की लाईब्रेरी, सूचना केन्द्र नयापुरा में राजकीय महाविद्यालय के समीप स्थित है। नगर में 2 संग्रहालय है, जो छत्र विलास उद्यान एवं गढ़ पैलेस में स्थित है। विश्राम गृह एवं डाक बंगला स्टेशन सड़क पर स्थित है। नगर का प्रमुख डाक एवं तार कार्यालय नयापुरा में स्थित है। नगर में कई होटल एवं धर्मशालाएँ है। नगर में आर.टी.डी.सी. का ट्यूरिस्ट होटल छत्रविलास उद्यान के बीच में स्थित है, जबकि सिंचाई विभाग का विश्राम गृह किशोरपुरा क्षेत्र में स्थित है। नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा नगर की विभिन्न आवासीय योजनाओं में 21 सामुदायिक भवन निर्मित किये गये हैं। नगर निगम कोटा द्वारा भी 32 सामुदायिक भवन निर्मित किये गये हैं, जिसमें से 12 भवन एवं परिसर सामुदायिक सुविधाओं के लिए उपलब्ध है एवं अन्य सेक्टर कार्यालय, औषधालय, हैल्पलाइन, विद्यालय इत्यादि उपयोग में आ रहे है।

इसके अलावा विभिन्न संस्थाओं एवं समाजों तथा निजी विकासकर्ताओं द्वारा भी विभिन्न सामुदायिक भवनों का निर्माण किया गया है।

2.6 (6) र जनोपयोगी सुविधायें

पीने योग्य जल की आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति, जल–मल निस्तारण की व्यवस्था नगरीय जीवन की मूलभूत आवश्यकतायें है। अतः नगर के विस्तार के साथ–साथ इनका उचित प्रावधान किया जाना आवश्यक है।

2.6 (6) र (i) जल आपूर्ति

कोटा नगर चम्बल नदी के किनारे स्थित है अतः नगर में पेयजल की आपूर्ति का स्रोत चम्बल नदी है। बैराज से बाई एवं दाई मुख्य नहर निकल रही है। दाई मुख्य नहर नगर के मध्य से कन्सुआ औद्योगिक क्षेत्र के समीप निकल रही है। अतः कोटा नगर में कृषि, औद्योगिक एवं घरेलु जल आपूर्ति की पर्याप्त क्षमता है। इसके अतिरिक्त ट्यूबवैल एवं हैण्डपम्प भी जल वितरण के मुख्य स्रोत हैं। चम्बल नदी के किनारे बैराज एवं इसका बड़ा जलाशय अकेलगढ़ में स्थित है। नगर का प्रमुख जल आपूर्ति केन्द्र अकेलगढ़ के नाम से ही जाना जाता है। वर्तमान में अकेलगढ़ में स्थित संयत्र की पीने योग्य पानी वितरण करने की वास्तविक आपूर्ति 251 एम.एल.डी. एवं वांछित आपूर्ति 269 एम.एल.डी. है।

अकेलगढ़ जल आपूर्ति केन्द्र की स्थापना वर्ष 1927 में हुई थी। नगर के दक्षिण में गत 10 वर्षो में नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा कई आवासीय योजनाएँ विकसित की गई हैं, जिनमें जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा अभी तक जल आपूर्ति विकसित नहीं की जा सकी है। इस क्षेत्र में नगर विकास न्यास द्वारा विकसित कुछ योजनाओं में ट्यूबवेल से सप्लाई की जा रही है। नगर के दक्षिण में महावीर नगर, इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र इत्यादि क्षेत्रों में जल आपूर्ति का पर्याप्त दबाव नहीं है।

वर्तमान में चम्बल नदी के पश्चिम में हुए नगरीय विस्तार की आवश्यकता के दृष्टिगत चम्बल नदी के पश्चिमी किनारे पर कोटा बैराज के जलाशय से इन्टेकवेल, सकतपुरा जल आपूर्ति केन्द्र एवं यहां से जलापूर्ति नेटवर्क की वृहद

परियोजना विकासरत है। नगर में लगभग 85% आबादी को जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा जल आपूर्ति की जा रही है। वर्तमान में औसत जल आपूर्ति 240 लीटर प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन है। नगर में जल वितरण पाईप लाईन की कुल लम्बाई 1257 कि.मी. है। इसके अतिरिक्त नगर में जल आपूर्ति हेतु 1116 हैण्डपम्प, 90 ट्यूबवैल, 23 ओवरहेड टैंक एवं 13 सी.डब्ल्यू.आर हैं। ओवरहैड टैंक एवं सी.डब्ल्यू.आर की कुल भराव क्षमता लगभग 325 लाख लीटर है। वर्ष 2012 के कोटा के जलापूर्ति कनेक्शनों को तालिका संख्या 10 में दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या – 10
जलापूर्ति कनेक्शन–कोटा–2012

क्र. संख्या	मद	कनेक्शनों की संख्या
1	घरेलू	158122
2	व्यावसायिक	4017
3	औद्योगिक	1227
4	अन्य	831
	कुल योग	**164197**

स्रोत : जनस्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, कोटा

2.6 (6) र (ii) जल–मल निकास एवं ठोस कचरा निस्तारण प्रबन्धन

वर्तमान में कोटा में पर्यावरण की दृष्टि से एवं चम्बल को प्रदूषण से बचाने हेतु यह महसूस किया गया कि सीवरेज व्यवस्था विकसित की जावे ताकि जल–मल का उचित स्थल पर निस्तारण हो सके। नगर के पुराने भाग में आंशिक रूप से शुष्क शौचालय भी स्थित है, जिन्हे अधिकांशतः फ्लश लेट्रिन में परिवर्तित कर दिया गया है। नई योंजनाओं में सेप्टिक टेंक युक्त फ्लश लेट्रिन हैं। नगर के आंशिक भाग में राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा विकसित सीवेज व्यवस्था से बिना ट्रीटमेंट किये हुये सीवेज का सीधे ही सामुदायिक सेप्टिक टैंक, खुली भूमि अथवा नालों में निस्तारण हो रहा है। है। वर्तमान में कोटा नगर में व्यक्तिगत रूप से सेप्टिक टैंक बनाकर मल निस्तारण की व्यवस्था का प्रचलन है।

कोटा के दक्षिण में भूमि चट्टानी है जहां नई कॉलोनियों का विकास हो रहा है। इसके अतिरिक्त चम्बल के सिंचाई क्षेत्र में बारां सड़क पर स्थित निचली भूमियों पर भी कॉलोनियाँ विकसित हो चुकी है। जिनमें जल–मल निकास की समस्या

गंभीर है। शहर के पुराने भाग में शुष्क शौचालय भी बने हुए है। कोटा क्षेत्र का सामान्य ढलान उत्तर एवं उत्तर पूर्व की ओर है। नगर की अनुकूल भौतिक परिस्थितियों के बावजूद नगर के कई क्षेत्रों की जल निकास व्यवस्था सही नहीं है एवं खुली नालियों से पानी बहता हुआ चम्बल नदी में प्रवाहित होता है।

विगत् वर्षो में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग द्वारा नगर के अधिकांश भाग को सम्मिलित करते हुए समन्वित सीवरेज योजना तैयार की गई है। प्रथम चरण में एशियन विकास बैंक से प्राप्त होने वाले ऋण द्वारा नगर के उत्तरी भाग में सीवरेज नेटवर्क विकसित किया गया है। वर्तमान में नगर विकास न्यास द्वारा द्वितीय चरण में चम्बल नदी के दोनों किनारों पर स्थित नगर के भाग एवं आंशिक दक्षिणी भाग को एन.आर.सी.पी. योजना के तहत एवं नगर के शेष दक्षिणी भाग को यू.आई.डी.एस.एस.एम.टी. योजना के तहत सीवरेज नेटवर्क से जोड़ा जा रहा है। नगर के दक्षिण में विकसित हो रही अधिकांश योजनायें चट्टानी भूमि पर स्थित हैं अतः इन योजनाओं में सीवर लाइन बिछाने का कार्य वर्तमान में भारी मशीनों की मदद से किया जा रहा है।

इस परियोजना के तहत कोटा नगर में साजीदेहड़ा नाले के समीप एवं ग्राम धाकड़खेड़ी के समीप 2 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किये गये है, जो कि अभी कार्यरत् नहीं हुये हैं। चम्बल नदी के पश्चिम में नगरीय विस्तार की आवश्यकताओं के अनुसार ग्राम बालिता के निकट सीवेज ट्रीटमेन्ट प्लांट का कार्य निर्माणरत् है। उक्त योजनाओं के क्रियान्वयन से सीवेज का ट्रीटमेंट के उपरान्त ही निस्तारण किया जायेगा।

वर्तमान में कोटा नगर में ठोस कचरे के निस्तारण हेतु नगर से दूर थेकड़ा एवं डाबी सड़क पर स्थल चिन्हित हैं। नगर में घरों से निकलने वाले कूड़ा–करकट के संग्रहण एवं निस्तारण हेतु उचित व्यवस्था नहीं है। लोगों द्वारा सड़क पर ही कूड़ा डाला जाता है जिसका समय पर निस्तारण नहीं हो पाता है। फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषित होता है। डम्पिंग स्थलों पर संग्रहित कूड़ा–करकट अवांछित स्थलों पर ही निस्तारित कर दिया जाता है।

2.6 (6) र (iii) विद्युत

कोटा नगर में चम्बल नदी के पश्चिम में 1240 मेगावॉट का सुपर थर्मल पॉवर प्लाण्ट है। समीपवर्ती जिलों में यथा झालावाड़ में कालीसिंध पॉवर प्रोजेक्ट, बारां जिले में छबड़ा थर्मल पॉवर प्लांट तथा अडानी पॉवर प्लान्ट, वर्तमान में विकसित किये जा रहे है एवं आंशिक रूप से विद्युत उत्पादन प्रारम्भ कर चुके है।

कोटा नगर के निकट मुख्य पन विद्युत उत्पादन केन्द्र राणाप्रताप सागर, गांधी सागर एवं जवाहर सागर बांध स्थित है। कोटा के समीप ही रावतभाटा में एटॉमिक पॉवर स्टेशन है। कोटा नगर से लगभग 49 कि.मी. की दूरी पर अन्ता कस्बे में गैस आधारित विद्युत उत्पादन केन्द्र एन.टी.पी.सी. भी है। निजी क्षेत्र के छोटे बायोमॉस पॉवर प्लांट नगर में रंगपुर के समीप तथा सवाईमाधोपुर जिले में उनियारा एवं बारां जिले में छीपाबड़ौद में स्थापित है, जो कि कचरे/भूसे से बिजली का उत्पादन करते है। इस प्रकार वर्तमान में कोटा एवं उसके आस–पास के क्षेत्रों से कुल 4600 मेगावॉट विद्युत उत्पादन हो रहा है, जो कि वर्ष 2015 तक बढ़ कर 8000 मेगावॉट होना विकासरत् है।

कोटा नगर में जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा वर्तमान व्यवस्था का रख–रखाव एवं वितरण किया जाता है। नगर में विद्युत आपूर्ति का मुख्य स्रोत सकतपुरा एवं बारां सड़क पर डायरा स्थित दो 220/132 के.वी. विद्युत केन्द्र एवं महावीर नगर, गोपाल मिल, वृहद् औद्योगिक क्षेत्र स्थित तीन 132 केवी विद्युत केन्द्र हैं।

इनके अतिरिक्त नगर में विभिन्न क्षेत्रों में लगभग बीस 33 केवी विद्युत उप केन्द्र कार्यरत्/निर्माणाधीन है। रानपुर में 220/132 केवी विद्युत केन्द्र प्रस्तावित है। वर्ष 2001 में कोटा नगर में विद्युत कनेक्शन एवं औसत प्रतिदिन विद्युत उपभोग को तालिका संख्या 11 में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 11

विद्युत कनेक्शन एवं उपभोग –2012–कोटा

क्र.सं.	मद	कनेक्शन	प्रतिदिन उपयोग (लाख यूनिटों में)
1	घरेलू	2,20,976	11.64
2	औद्योगिक	5,035	13.73
3	सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था	482	0.67
4	अन्य	55,780	14.34
	योग	**2,82,273**	**40.38**

स्रोत : जयपुर विद्युत वितरण निगम लि0, कोटा।

2.6(6) र (iv) श्मशान एवं कब्रिस्तान

वर्तमान में कोटा नगर में श्मशान एवं कब्रिस्तान खेड़ली फाटक, भदाना, छावनी, विज्ञान नगर, नयापुरा, कुन्हाडी, शवदाह घाट की गली, चम्बल रेस्ट हाउस के पास, केशवपुरा, सुभाष नगर, कन्सुआ, लाड़पुरा, रंगतालाब व काला तालाब के मध्य स्थित है। इनमें से अधिकांशतः श्मशान एवं कब्रिस्तान चम्बल नदी के किनारे एवं नालों पर स्थित है। विगत् कुछ वर्षो में कई श्मशानों एवं कब्रिस्तानों पर सुविधाऐं विकसित की गई है।

2.6 (7) परिसंचरण

2.6 (7) अ यातायात व्यवस्था

वर्तमान में जयपुर–जबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग–12 एवं पिण्ड़वाडा–शिवपुरी राष्ट्रीय राजमार्ग–27 नगर के मध्य से होकर गुजर रहे हैं एवं वर्तमान में इनके बाईपास निर्माणाधीन / प्रस्तावित हैं। बाईपास नही होने के कारण नगर के मध्य एकमात्र दक्षिण से उत्तर की ओर जाने वाली स्टेशन सड़क पर स्थानीय यातायात एवं भारी यातायात का काफी दबाव है। फलस्वरूप नगर में यातायात, दुर्घटनायें एवं प्रदूषण संबंधित समस्यायें बहुतायत से उत्पन्न हो रही है। यह सड़क स्थानीय यातायात के लिए अपर्याप्त है। साथ ही सड़क के इर्द–गिर्द नगर की प्रमुख औद्यौगिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियां होने के कारण इस सड़क से भारी यातायात ले जाना उचित नहीं है। अतः यह नितान्त आवश्यक है

कि राष्ट्रीय राजमार्ग–12 एवं राष्ट्रीय राजमार्ग–27 के बाईपास हेतु शीघ्र व्यवस्था की जाये।

गत् वर्षो में उपरोक्त समस्या के समाधान हेतु झालावाड सडक को दक्षिण में नदी पार कर बून्दी सड़क से जोड़ते हुये राष्ट्रीय राजमार्ग–12 का बाईपास का कार्य निर्माणाधीन है। उक्त बाईपास हेतु चम्बल नदी पर नया गाँव के समीप पुल का निर्माण कार्य जारी है। उपरोक्त बाईपास के निर्माण से दक्षिण दिशा से आने वाला समस्त यातायात सीधे ही बून्दीसड़क की ओर निकल जायेगा एवं नगर में विद्यमान् स्टेशन सडक को यातायात के वर्तमान् दबाव से राहत मिलेगी।

कोटा का प्रभाव क्षेत्र चम्बल सिंचित क्षेत्र में होने के कारण आसपास के क्षेत्रों जिसमें मुख्यतयाः दायीं मुख्य नहर एवं बायीं मुख्य नहर से जुडे क्षेत्र से कृषि उत्पाद कोटा नगर के घने विकसित क्षेत्र से होता हुआ औद्यौगिक क्षेत्र में स्थित कृषि उपज मण्डी (भामाशाह मण्डी) तक आता है। साथ ही बाराँ सड़क जो कि राष्ट्रीय राजमार्ग–27 है, से भारी यातायात झालावाड़ सड़क (राष्ट्रीय राजमार्ग–12) की तरफ नगर के मध्य घने विकसित क्षेत्र से होकर गुजरता था। उक्त यातायात नगर की वर्तमान स्टेशन सड़क पर से गुजरने के कारण यहाँ पर यातायात की काफी समस्यायें थी। अतः बाराँ सड़क से आने वाले कृषि उत्पादों के भारी यातायात को सीधे कृषि उपज मण्ड़ी ले जाने एवं अन्य भारी यातायात को सीधे झालावाड़ सड़क पर ले जाने हेतु मास्टर प्लान में एक बाह्य सड़क निर्मित की गई थी। दक्षिणी बाईपास सड़क को बाराँ सड़क से झालावाड़ सड़क व रावतभाटा सड़क के मध्य का भाग निर्मित हो चुका है, जिससे भारी यातायात का आवागमन शुरू होने से नगर में यातायात समस्याओं से आंशिक राहत मिली है।

नगर के मध्य स्थित स्टेशन सड़क पर यातायात के दबाव को कम करने के लिए रेलवे लाईन के समानान्तर स्टेशन से औद्यौगिक क्षेत्र तक सड़क निर्मित की गयी है। इस सड़क के निर्माण से नगर के उत्तरी व दक्षिणी भाग में स्थित औद्यौगिक क्षेत्र के बीच सीधा सम्पर्क उपलब्ध हो सका है, जिससे कि बाराँ सड़क से आने वाला यातायात भी इस मार्ग का उपयोग कर सीधे दक्षिण में स्थित औद्यौगिक क्षेत्र एवं कृषि उपज मण्डी तक जा सकता है। अतः इस उप प्रमुख सड़क के

निर्माण से नगर के मध्य स्थित स्टेशन सड़क पर यातायात के दबाव में कमी आयी है।

पिण्डवाडा–शिवपुरी राष्ट्रीय राजमार्ग (राष्ट्रीय राजमार्ग–27) का वर्तमान अलाइनमेन्ट चम्बल नदी के पश्चिम में काफी घुमावदार एवं विकसित क्षेत्र के मध्य से होकर है। साथ ही इसका राष्ट्रीय राजमार्ग–12 पर मिलान बिन्दु चम्बल पुलिया के मुहाने पर लघु कोण के धुमाव पर है। अतः उक्त सड़क के अलाइमेन्ट में परिवर्तन करते हुए नगर विकास न्यास द्वारा ग्राम नान्ता के पश्चिम से सीधा ही बून्दी सड़क पर मिलाने का कार्य विकासरत् है। दक्षिणी बाईपास के पूर्णतया विकसित होने तक यह सड़क नगर के भारी यातायात समस्या में राहत प्रदान करेगी। नयापुरा से राष्ट्रीय राजमार्ग–12 के वर्तमान मार्ग पर स्थित चम्बल पुल के दोहरीकरण का कार्य निर्माणाधीन है। इस पुल पर से राज्य राजमार्ग–12 का समस्त भारी यातायात इस पुल पर से गुजरता है एवं नगरीय यातायात में बाधाऐं एवं रूकावटें उत्पन्न करता है। अतः यह कार्य शीघ्र अतिशीघ्र पूर्ण किया जाना आवश्यक है। रावतभाटा सड़क (राज्य राजमार्ग–33) नगर के मध्य से निकल रही है।

झालावाड़ सड़क के अतिरिक्त नगर की अन्य प्रमुख सड़कों में डी.सी.एम. रोड़, रावतभाटा रोड, रंगबाडी रोड, जहां पर स्थानीय यातायात का भारी दबाव है। इसके अतिरिक्त कोटड़ी चौराहे से बजरंग नगर को जोड़ने के लिए L–आकार के फ्लाईओवर का निर्माण भी शीघ्र अतिशीघ्र पूर्ण किया जाना आवश्यक है। किशोरपुरा दरवाज़ा पुराने नगर एवं नये विकसित क्षेत्रों को जोड़ने वाला नगर कोट का एक महत्वपूर्ण दरवाज़ा है। यातायात को सुनियोजित करने हेतु किशोरपुरा सड़क से किशोरपुरा गेट के पश्चिम से गढ़ पैलेस तक 2 लेन एलिवेटेड सड़क बनायी गई है। साथ ही सूरजपोल दरवाजे के पास स्थित गुमानपुरा पुलिया के चौड़ाकरण का कार्य भी किया गया है। इससे पुराने नगर एवं नये विकसित क्षेत्रों के बीच आवागमन सुचारू हुआ है।

कोटा नगर का विस्तार मुख्यतयाः उत्तर–दक्षिण दिशा में हो रहा है, जिससे रेलवे स्टेशन से कोटा नगर के दक्षिण में विकसित योजनाओं की दूरी 15–16 कि.मी. से भी अधिक हो गई है। अतः विभिन्न आवासीय क्षेत्रों एवं कार्यस्थलों से, रेलवे

स्टेशन व बस स्टेशन की दूरी निरन्तर बढती जा रही है, जो कि परिसंचरण की दृष्टि से उचित नहीं है। पुराने नगर में गलियां काफी सकड़ी हैं व टेढ़ी–मेढ़ी है, जिसके कारण यातायात अवरूद्ध होता है। पुराने नगर की तुलना में नई विकसित बस्तियों में सड़के अपेक्षाकृत अच्छे स्तर की बनी हुई हैं। नगर के पुराने हिस्सों में गलियों/सड़कों की चौड़ाई प्रायः 5 फीट से 10 फीट के बीच है तथा कोई निश्चित सड़क व्यवस्था नहीं है। रामपुरा बाजार, बजाजखाना, घन्टाघर, पुरानी सब्जीमंडी, शास्त्री मार्केट, इन्द्रामार्केट, इत्यादि जगहों पर पार्किंग की उचित व्यवस्था नही है, जिससे इन क्षेत्रों में भीड़भाड़ रहती है एवं व्यस्त समय में वाहनों का निकलना दूभर हो जाता है। वर्तमान में नगर विकास न्यास के विशेष प्रयासों द्वारा पुराने शहर में पार्किंग व्यवस्था एवं सम्पर्क सुधार हेतु विकास कार्य किये जा रहे है।

2.6 (7) ब बस तथा ट्रक टर्मिनल

वर्तमान में बस अड्डा नयापुरा क्षेत्र में चम्बल पुलिया के समीप कार्यरत है, जो कोटा के बढ़ते विकास को देखते हुए बहुत छोटा एवं असुविधाजनक है। इस बस स्टैण्ड के प्रवेश मार्ग पर चम्बल पुलिया से तेज घुमाव होने एवं राष्ट्रीय राजमार्ग –12 एवं 27 पर स्थित होने की वजह से यहां पर यातायात की बहुत समस्या रहती है। इस क्षेत्र में निजी बसों एवं जीपों के संचालन से यातायात समस्या और भी दयनीय हो रही है। विद्यमान बस अड्डे के पहुंचमार्ग पर चम्बल पुलिया से तेज घुमाव होने के कारण यहां पर यातायात समस्याँ पैदा होती हैं, साथ ही उक्त भूमि पर बस अड्डा के विस्तार हेतु भी और भूमि उपलब्ध नहीं है। अतः बस स्टेण्ड को स्थानान्तरित करने हेतु मास्टर प्लान में डी.सी.एम. सड़क पर प्रस्तावित स्थल पर नगर विकास न्यास की लगभग 3 एकड़ भूमि पर नया बस अड्डा निर्माणरत् है।

नगर विकास न्यास, कोटा के द्वारा झालावाड़ सड़क पर यातायात नगर विकसित किया गया है, किन्तु वहां पर परिवहन व्यवसाय अभी तक पूर्ण रूप से स्थानान्तरित नहीं होने के फलरूवरूप उक्त गतिविधियां नगर के मध्य से

मुख्यतः डी.सी.एम. सड़क पर भी आंशिक रूप से संचालित हो रही हैं, जिससे नगर में यातायात सम्बन्धी अनेक समस्याऐं पैदा हो रही हैं।

2.6 (7) स रेल एवं हवाई सेवा

कोटा, दिल्ली–मुम्बई बड़ी रेलवे लाईन पर एक प्रमुख जंक्शन है। मुख्य रेलवे स्टेशन नगर के उत्तर में स्थित है। नये विकसित क्षेत्रों की सुविधा के दृष्टिगत डकनिया रेलवे स्टेशन विकसित किया गया है, जहां पर कुछ ट्रेनों का ठहराव होता है। कोटा हवाई अड्डा स्थल पर पर्याप्त भूमि एवं हवाई पट्टी भी उपलब्ध नहीं है। नगर के मध्य में स्थित होने के कारण आसपास विकसित हो चुके आवासीय क्षेत्रों में दुर्घटना की भी संभावनाऐं भी बनी रहती है। वर्तमान में यहां से नियमित वायु–सेवा की सुविधा भी उपलब्ध नहीं है।

2.7 गत् मास्टर प्लान (2001–2023) प्रस्ताव व वर्तमान विकास की समीक्षा

राज्य सरकार ने राजस्थान नगर सुधार अधिनियिम 1959 की धारा 3 की उप धारा 3(1) के अन्तर्गत दिनांक 27.12.2001 को अधिसूचना जारी कर मुख्य नगर नियोजक, राजस्थान जयपुर को कोटा का नया मास्टर प्लान तैयार करने हेतु अधिकृत किया गया। कोटा के मास्टर प्लान हेतु 64 राजस्व ग्रामों को सम्मिलित करते हुए नगरीय क्षेत्र की अधिसूचना जारी की गयी जिसके अन्तर्गत कुल 125000 एकड़ भूमि नगरीय क्षेत्र के अन्तर्गत शामिल थी। कोटा प्रारूप मास्टर प्लान–2023 का प्रकाशन दिनांक 12.09.2003 को किया जाकर आपत्ति एवं सुझाव आमंत्रित किये गये। इसके आधार पर कोटा मास्टर प्लान को अन्तिम रूप दिया जाकर कोटा मास्टर प्लान राज्य सरकार द्वारा राजस्थान नगर सुधार अधिनियम 1959 की धारा 6 की उप धारा (3) के अन्तर्गत अनुमोदित कर उक्त अधिनियम की धारा 7 के अनुसरण में अधिसूचना क्रमांक प10(3)नविवि/3/80 दिनांक 15.04.2005 द्वारा अनुमोदित कर दिया गया।

वर्ष 2023 के प्रस्तावित भू–उपयोग के अनुसार कोटा का विकसित क्षेत्र 32821 एकड़ प्रस्तावित किया गया था, जिसमें आवासीय 14877, वाणिज्यिक 1802, औद्योगिक 4860, सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यालय 490, आमोद–प्रमोद

2150, सार्वजनिक–अर्द्धसार्वजनिक 4142 एवं परिसंचरण 4500 एकड़ प्रस्तावित था।

कोटा मास्टर प्लान – 2023 में वर्ष 2011 की जनसंख्या 10,00,000 तथा क्षितिज वर्ष 2023 की जनसंख्या 15,00,000 अनुमानित की गयी थी, जो कि 2011 की जनगणना के अनुसार 10,01,365 है। अतः वर्ष 2011 में नगर की जनसंख्या में अनुमान स्वरूप वृद्धि हुई है, परन्तु नगर का विस्तार प्रस्तावित सीमाओं से अधिक दूरियों तक हुआ है।

वर्ष 2001 के विद्यमान भू–उपयोग के अनुसार कोटा नगर का कुल विकसित क्षेत्र 15800 एकड़ था, जिसमें से आवासीय 6549, वाणिज्यिक 750, औद्योगिक 2858, राजकीय कार्यालय 209, आमोद–प्रमोद 404, सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक 2030 एवं परिसंचरण 3000 एकड़ था। वर्ष 2012 के विद्यमान भू–उपयोग के अनुसार कोटा का विकसित क्षेत्र 21221 एकड़ है, जिसमें आवासीय 9304, वाणिज्यिक 1170, औद्योगिक 4050, राजकीय कार्यालय 243, आमोद–प्रमोद 510, सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक 2810 एवं परिसंचरण 3134 एकड़ है।

यह आँकड़े दर्शाते हैं कि पिछले दशक में कोटा में समस्त भू–उपयोगों के अन्तर्गत काफी वृद्धि हुई है। आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत अपेक्षाकृत कम वृद्धि हुई है। नगर की भौतिक सीमाओं का विस्तार आवासीय, वाणिज्यिक, औद्योगिक एवं संस्थागत उपयोगों के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 12 एवं 27, राज्य राजमार्ग संख्या 33 एवं 51 तथा सभी प्रमुख व मुख्य सड़कों पर काफी दूरी तक हुआ है। अतः स्पष्ट है कि नगर के विकास के फलस्वरूप निर्मित हुए रंगपुर एवं प्रेम नगर रेलवे ओवरब्रिज, रेलवे कॉलोनी अण्डर पास, डीसीएम नहर के ऊपर पुल के कारण नगरीय सड़क सम्पर्को ने भौतिक एवं भौगोलिक बाधाओं को काफी हद तक दूर कर दिया है, जिसके फलस्वरूप रेलवे लाइन के पार के क्षेत्रों का मुख्य धारा से जुड़ाव हो सका है। वर्तमान में बून्दी सड़क एवं माला फाटक पर रेलवे ओवर ब्रिज तथा चम्बल नदी पर स्थित पुल का दोहराकरण का कार्य निर्माणरत् है एवं शीघ्र ही पूर्ण होना सम्भावित है। जिसके फलस्वरूप चम्बल पार के क्षेत्रों तथा रेलवे लाइन के उत्तर के क्षेत्रों का भी नगर से सुगम सम्पर्क

स्थापित हो जायेगा। मास्टर प्लान में प्रस्तावित बस स्टैण्ड मास्टर प्लान के अनुरूप विकसित किये जा रहे हैं एवं यातायात नगर विकसित किया जाकर आंशिक रूप से स्थानान्तरित किया जा चुका है।

समानुपातिक रूप से रिहायशी उपयोगों का विस्तार नहीं होने के कारण नगर का आवासीय घनत्व करीब 107 व्यक्ति प्रति एकड़ है। पुराने नगर की बसावट अत्यधिक घनी व तंग हो चुकी है, जहाँ आवासीय घनत्व कहीं–कहीं 500 व्यक्ति प्रति एकड़ से भी अधिक है।

कोचिंग संस्थाओं के समीपवर्ती एवं प्रभाव क्षेत्रों में तथा नयापुरा से स्टेशन के मध्य आवासीय मांग से बढ़ी हुई जमीन की दरों और घटते हुए रिहायशी भवनों की सुविधा के कारण नगर में जीवन यापन काफी मंहगा हो गया है। इसके फलस्वरूप कृषि भूमि पर कई नियमित / अनियमित आवासीय कॉलोनियाँ विकसित हो गई, जिनमें से नगर विकास न्यास की योजनाओं को छोड़कर अन्य योजनाओं में समन्वित नियोजन का ध्यान न रखकर अनियोजित एवं अव्यवस्थित रूप से नये निर्माण हो रहे हैं। इस दौरान कृषि भूमि पर कई आवासीय कॉलोनियाँ विकसित हो गई। बून्दी सड़क एवं बारां सड़क के इर्द–गिर्द नगरीय विकास का दबाव रहा है।

ट्रांसपोर्ट, वाहन रिपेयर, भवन निर्माण सामग्री व अन्य भारी सामानों के बाजारों से नगर में भारी यातायात उत्पन्न होता है। शेष वाणिज्यिक विकास सड़कों के सहारे –सहारे पतली पट्टी के रूप में हुआ है। कई व्यावसायिक गतिविधियाँ तंग क्षेत्रों में स्थित हैं, जो यातायात को अवरुद्ध करती हैं। नगर में उचित यातायात प्रबन्धन नहीं है।

यह स्पष्ट है कि कोटा नगर के नियोजित भावी विकास हेतु यह आवश्यक है कि अन्य भू–उपयोगों के साथ–साथ आमोद–प्रमोद एवं अन्य सामुदायिक सुविधाओं का उचित अनुपात में विकास किया जावे। विगत् वर्षो में जो निजी भूमियों पर आवासीय विकास हुआ है वह अधिकांशतः अच्छी गुणवत्ता का नहीं हैं। योजनाओं में उचित चौड़ाई की सड़कों एवं पार्क इत्यादि सुविधाओं का अभाव है। आधारभूत सुविधायें यथा सड़क, नाली, बिजली, पानी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हैं। उचित जल निकासी नहीं है। अतः यह अपेक्षित है कि भविष्य में

आवासीय योजनायें निर्धारित मानदण्डों की पालना करते हुए विकसित हों। वाणिज्यिक विकास भी योजनाबद्ध तरीके से नहीं हुआ है। पार्किंग का अभाव है, जिससे शहर में यातायात की समस्या बढ़ रही है। अतः यह आवश्यक है कि भविष्य में वाणिज्यिक क्षेत्र पर्याप्त पार्किंग प्रावधान के साथ विकसित हो।

कोटा नगर के पूर्व मास्टर प्लान में उपरोक्त समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक सुझाव दिये गये थे एवं मास्टर प्लान का क्रियान्वयन नगर विकास न्यास व विभिन्न विभागों द्वारा किया जाना था, परन्तु अनेक कारणों से नगर का पूर्णरूपेण नियोजित विकास नहीं हो पाया है।

वर्तमान में कोटा के नगरीय विकास के विस्तार एवं कोटा मास्टर प्लान के नगरीय क्षेत्र की सीमा में आस–पास के ग्रामों के शामिल होने से इन क्षेत्रों में अनियोजित विकास पर नियंत्रण व नियोजित विकास की आवश्यकता को तीव्रता से महसूस किया गया है। उपरोक्त बदली हुई परिस्थितियों एवं उभरती हुई समस्याओं के कारण यह आवश्यक हो गया है कि नगरीय सीमा में सम्मिलित सम्पूर्ण क्षेत्र के योजनाबद्ध विकास के लिये नया मास्टर प्लान तैयार किया जाये। राज्य सरकार द्वारा वर्तमान मास्टर प्लान–2023 की मध्यावधि में ही पुनः नया मास्टर प्लान बनवाये जाने का निर्णय लिया गया एवं कोटा मास्टर प्लान क्षितिज वर्ष 2031 के लिये तैयार करने का निर्णय लिया गया। इस हेतु कुल आधार जनसंख्या 2011 में 10,01,365 है एवं क्षितिज वर्ष 2031 की जनसंख्या 21,00,000 अनुमानित की गयी है। नगर नियोजन विभाग के निर्देशन में नगर विकास न्यास कोटा द्वारा 'आकार कन्सलटेन्ट्स, कोटा' के माध्यम से कोटा शहर का प्रारूप मास्टर प्लान–2031 तैयार किया गया है।

इस मास्टर प्लान का क्षितिज वर्ष 2031 मानते हुए राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक प. 10(3)नविवि/3/80 पार्ट–1 दिनांक 04/09/2013 द्वारा कुल 119 राजस्व ग्रामों (कोटा जिले के 108 राजस्व ग्राम एवं बून्दी जिले के 11 राजस्व ग्राम) को शामिल किया गया है। इस प्रकार कुल 119 राजस्व ग्राम कोटा मास्टर प्लान 2031 की नगरीय सीमा बनाते हैं। तालिका संख्या 12 में वर्ष 2001 व वर्ष 2012 के विद्यमान भू–उपयोग एवं कोटा मास्टर प्लान–2023 में प्रस्तावित भू–उपयोग 2023 को तुलनात्मक रूप से दर्शाया गया है।

तालिका संख्या – 12
भू–उपयोग समीक्षा, कोटा –2001, 2012, 2023

क्र. सं.	भू–उपयोग	विद्यमान भू–उपयोग 2001		विद्यमान भू–उपयोग 2012		मास्टर प्लान 2001–2023 में प्रस्तावित भू–उपयोग–2023 क्षेत्रफल (एकड़ में)	
		क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत
1	आवासीय	6549	41.45	9304	**43.84**	14877	45.33
2	वाणिज्यिक	750	4.75	1170	**5.51**	1802	5.49
3	औद्योगिक	2858	18.08	4050	**19.09**	4860	14.81
4	राजकीय	209	1.32	243	**1.15**	490	1.49
5	आमोद–प्रमोद	404	2.56	510	**2.40**	2150	6.55
6	सार्वजनिक एवं अर्द्ध–सार्वजनिक	2030	12.85	2810	**13.24**	4142	12.62
7	परिसंचरण	3000	18.99	3134	**14.77**	4500	13.71
	कुल विकसित क्षेत्र	**15800**	**100.00**	**21221**	**100.00**	**32821**	**100.00**
8	जलाशय	1042	–	1391	–	1280	–
9	कृषि एवं पौधशालाऐं	423	–	365	–	1543	–
10	अन्य रिक्त एवं अर्द्धविकसित भूमियां	990	–	3283	–	–	–
11	सरकारी आरक्षित	1595	–	4379	–	1715	–
12	राख निस्तारण	1150	–	861	–	1150	–
	नगरीयकरण/ नगरीकृत क्षेत्र	**21000**	–	**31500**	–	**38509**	–

स्रोत : नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार सर्वेक्षण एवं अनुमान